Dr.Madhukarrao Wasnik
P.W.S. Art's and Commerce College,
Kamptee Road, Nagpur-26

Department of Economics

Dr. Lakhan Ingle

Class - M.A. I Year (SEM- II)

Subject- Public Economics-II

Topic- Concept of Public Expenditure

(Hindi Medium)

सार्वजनिक व्यय की संकल्पना (Concept of Public Expenditure)

राजस्व के अंतर्गत सार्वजनिक व्यय की संकल्पना यह अंत्यत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सार्वजनिक व्यय मतलब सरकार के किया हुआ खर्च, या सार्वजनिक सत्ता ने किया हुआ खर्च। इसमे प्रमुख केंद्र सरकार प्रादेशिक सरकार, स्थानिय सरकार इनका सार्वजनिक सत्ता के रूप में समावेश किया जा सकता है। १९ वी शताब्दी में सार्वजनिक व्यय की संकल्पना पर बहोत कम अर्थशास्त्रीयो ने महत्व दिया। परंतु आरंभ में सरकार का कार्य न्यायव्यवस्था, संरक्षण स्वास्थ्य व सामाजिक कल्याण इन जैसे व्यवस्था का सार्वजनिक व्यय में समावेश किया जाता था। प्राचीन काल में तो सार्वजनिक खर्च यह एक अपव्ययी की व्यवस्था मानी जाती थी। इतनाहि नही व्यावसायिक क्षेत्र से पैसों का अधिक अच्छे प्रकार से उपयोग हो सकता है, ऐसी एक श्रद्धा थी। कालोघात यह परिस्थिती सर्वतः बदलकर आर्थिक प्रणाली यह विकास के तरफ और सार्वजनिक व्यय का आधिकाधिक

Scanned with CamScanner

PAGE NO
DATE

महत्व दिये जाने वाली तथ हुई। आधुनिक काल मे तो सार्वजानिक खर्च की संकल्पना को आधिक महत्व प्राप्त हुआ है। अंतेजी अर्थशास्त्रीयो मे सार्वजानिक व्यय के अभ्यास विषय मे थोडा बहोत प्रभाव मे उदासीन होता है।

सार्वजानिक व्यय की यह संकल्पना विकासाभिमुख अर्थव्यवस्था को प्रेरक देनेवाली व्यवस्था मानी जाती है इतना ही नही विकासनशील अर्थव्यवस्था मे लोककल्याण की संकल्पना के कारण सार्वजानिक व्यय मे वृध्दी विकासाभिमुख अर्थव्यवस्था का सुलक्षण माना जाता है। लोकप्रशासन विकासाभिमुख कार्य, बढती जनसंख्या, नगरीकरण, आधुनिक खेती व्यवसाय और स्पर्धा अनेक बाते सार्वजानिक व्यय मे वृध्दी करते है।

संपूर्ण समाज के कल्याण निश्चित करने के लिए और दिनक्रम जीवन मे सरकारी खर्च करने के लिए सरकार ने किया हुआ व्यय मतलब सार्वजानिक खर्च है।

Scanned with CamScanner

सार्वजनिक व्यय के कारण (Causes Public expenditure) सार्वजनिक व्यय के कारण निम्न है।

① बढ़ती जनसंख्या :- सभी देश की जनसंख्या का विचार किया जाता है तो यह देखने मिलता है कि विश्व में सभी देशों की जनसंख्या बढ़ रही है। विशेषतः आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए देश में जनसंख्या वृद्धि का वेग बहोत ही भयानक है जिस तेजी से बढ़ने वाली जनसंख्या को विविध सेवा देने के लिए सरकार को बड़े प्रमाण में खर्च करनी पड़ता है।

② बढ़ता शहरीकरण :- शहर में रोजगार की संधी उपलब्ध होने के कारण गाँव के लोग शहर में काम ढूंढने के लिए आते हैं। जिसके कारण जनसंख्या का केंद्रीकरण शहरों में होने लगा है। ऐसे शहरों में बड़े प्रमाण में जनसंख्या का और औद्योगिक संस्था का केंद्रीकरण होता है। ऐसे शहरों में विविध सुविधाओं के लिए सरकार को बहोत अधिक खर्च करना पड़ता है। इलेक्ट्रीकसीटी, पानी की उपलब्धता, स्वच्छता, रास्ते संरक्षण,

Scanned with CamScanner

आरोग्य, शिक्षा, स्थानिक वाहतुक, गृहनिर्माण, कानून या पोलीस, स्थानिक यातायात इत्यादि पर अधिक खर्च करना पड़ता है ऐसे प्रकार की सेवा उपलब्ध कराकर देना पड़ता है जिससे सरकार का प्रतिव्यक्ति खर्च बढ़ता है।

(3) कल्याणकारी राज्य की कल्पना है अभी देशो मे कम

आधिक प्रमाणन मे कल्याणकारी राज्य की कल्पना को स्वीकार कीया गया है। कल्याणकारी राज्य की कल्पना स्वीकार किया जाने के कारण जनता को संरक्षण के साथ उनकी कल्याण की जबाबदारी भी सरकार पर आयी। जनता का महत्तम कल्याण साध्य करने हेतु अनेक योजना स्वीकार करके उसको अमल मे भी लाया जाता है। आर्थिक समता, पूर्ण रोजगार, आर्थिक स्थैर्य, दुर्बलो की मदत, सर्वांगीण विकास, महत्तम कल्याण, सामाजिक सुरक्षा ऐसी जबाबदारी सरकार को स्वीकारना पड़ता है। इस जबाबदारी को पूरा करने के लिए सरकार जो कार्य करना पड़ता है उसका खर्च अधिक होता है। रोजगार हमी वेतन, वृद्धापकाल वेतन, औषधों के लिए मदत

स्वास्थ्य, वेतन, शैक्षणिक सुविधाए, निःशुल्क शिक्षा, महंगाई भत्ता, घर किराया भत्ता इत्यादी कल्याणकारी योजनाओ का प्रचंड खर्च सरकार को करना पड़ता है।

(4) लष्कर व संरक्षण व्यवस्था का स्वरूप

(5) विकास व नियोजनात्मक कार्य

(6) लोकशाही प्रणाली मे वृध्दी :- विश्व मे बहुसंख्या देशो मे लोकशाही प्रतिनिधिक शासन कम अधिक प्रभाव मे स्वीकार किया गया है। लोकशाही विकेन्द्रीकरण की क्रिया देश मे शुरू हुई कि सभी स्तरो पर सरकारे निर्माण होती है। ये सभी सरकारे चलवाना मतलब बहुत अधिक व्यय सरकार को करना पड़ता है। लोकशाही चुनाव, लोक निर्वाचित प्रतिनिधी, लोकसभा, राज्यसभा, विधान सभा, विधान परिषद, महानगरपालिका, नगरपालिका, जिल्हा परिषद, पंचायत समिती, ग्रामपंचायत ऐसी शासन की अनेक रचना तैयार होती है उसका खर्च बड़ा होता है। इसमे अनेक समिती सार्वजनिक आयोग, जानकारी मंडल, राष्ट्रीय संस्था के सदस्यत्व और

Scanned with CamScanner

PAGE NO.
DATE :

प्रतिनिधित्व प्रशासकीय व्यय इसका प्रमाण वृद्धि होता है। इस प्रमाण में परदेश की राजदूतावास, शिष्टमंडल, संयुक्त राष्ट्रसंघ, अंतरराष्ट्रीय मुद्रानिधि, विश्व आधिकोष इत्यादि अंतरराष्ट्रीय संस्था की सदस्यत्व और सर्व बातों का परिणाम सरकारी खर्चे पर होता है और वह बढ़ता ही जाता है।

(ब) मुल्क शासन खर्च – राज्य चलाने के लिए और अंतर्गत सुव्यवस्था रखने के लिए प्रत्येक सरकार को प्रशासनिक खर्च करना पड़ता है। सरकार के कार्य में सतत वृद्धि होने के कारण विविध मंत्रालये, विविध खाते, अनेक अधिकारी और उनका बड़े प्रमाण में नोकरवर्ग निर्माण हुआ है। सरकारी यंत्रणा दिनों दिन व्यापकता आ रहा है। प्रत्येक सरकार को दूसरे देशों में वकीलाती व दूतावास खोलने पड़े हैं। इन सब पर सरकार को बड़े प्रमाण पर खर्च करना पड़ता है। बढ़ती महंगाई के कारण सरकारी अधिकारी व कर्मचारी अधिक वेतन, महंगाई भत्ता मांगना, सरकार को वह देना पड़ता है। केन्द्र सरकार ने एक बार अधिक वेतन या महंगाई भत्ता दिया

Scanned with CamScanner

PAGE NO
DATE

कि राज्य सरकार को जिल्हा परिषद को नगर परिषद को भी देना पड़ता है। सभी सार्वजनिक सत्ता का नागरि प्रशासन पर खर्च बढ़ता है वैसे ही लोकशाही शासन पद्धति मे ऐसा प्रशासकीय खाते मे बहुत बार आवश्यकता से अधिक रोजगार भरती होते है और सरकार खर्च बढ़ता है।

(8) औद्योगिक विकास

(9) उद्योगो का और व्यवसाय का राष्ट्रीयकरण

(10) किमत में वृद्धि :- विश्व के सभी देशो मे किमत मे सतत वृद्धि आयी दिखाई देती है। पूर्वी शताब्दी मे किमत वृद्धि शुरू हुए और वह अभी भी शुरू है। विशेषत: दुसरे महायुद्ध के बाद किमत मे बहुत बड़े प्रमाण मे वृद्धि होती है बढ़ती किमत के कारण सरकार खरेदी की गई वस्तु व सेवा उनको अधिक किमत देनी पड़ती है। इसके अलावा किमत मे वृद्धि के कारण नोकरो का वेतन और अन्य भत्तो में वृद्धि करनी पड़ती है। इन सब के कारण सरकारी व्यय मे वृद्धि होती है।

Scanned with CamScanner

PAGE NO.
DATE :

(11) उत्पादन के वृद्धि को उत्तेजन :- खाजगी क्षेत्रो मे उद्योगो की सहायता करना यही सरकार की जबाबदारी है। नई उद्योगधंधो की स्थापना के लिए, प्रस्थापित उद्योगो के विकास के लिए वैसे ही छोटे - बडे कृषि व उद्योजक इनको आवश्यक वे साहाय्यता देकर देश की उत्पादन वृद्धि को चालना देने का कार्य सरकार को करना पडता है। जिसके कारण सरकारी खर्च मे वृद्धि होती है

(12) सरकार के तरफ देखने का लोगो के दृष्टिकोण मे बदल

<u>निष्कर्ष</u> : उपरोक्त सभी घटको का और कारणो का विचार किया की आधुनिक काल मे सभी स्तर पर सार्वजनिक व्ययो मे वृद्धि हुई और आज भी हो रही है इस की स्पष्ट कल्पना आती है सरकारी व्यय मे वृद्धि होना बुरा नही पर सरकारी व्यय मे वृद्धि के कारण देश के उत्पादन का प्रमाण मे वृद्धि संपत्ती के वितरण मे सुधार, आर्थिक स्थैर्य, भावी पिढी को अधिक सुविधा उपलब्धता इत्यादि उद्देश्य साध्य होते हुए भी वास्तव

Scanned with CamScanner

मे सरकारी मे व्यय मे वृद्धि भी अच्छी हो रही है।

सार्वजनिक व्यय की रचना
(Structure of Public Expenditure)

सरकार को समाज की या देश की जीवन सही तरह से चलने के लिए अनेक जबाबदारी पूरी करनी पड़ती है। पारंपारिक पद्धति से विचार करने से, सरकार को तीन कार्य पूर्ण करने पड़ते है।
(1) बाहरी आक्रमण से देश का संरक्षण
(2) अंतर्गत कानून व सुव्यवस्था
(3) सार्वजनिक हित का प्रकल्प चलाना इत्यादि

परंतु फ्रान्स की राज्यक्रांती, इंग्लैंड या इसके अलावा युरोपियन देश की औद्योगिक क्रांती, लोकशाही शासन पद्धति मे बढ़ता विस्तार वैसे ही २०वी. शताब्दी मे महत्वपूर्ण रहने वाली कल्याणकारी राज्य की संकल्पना और समाजवादी विचार धारणी का बढ़ता प्रभाव जिसके कारण सरकार की जबाबदारी को और कार्यों की बड़े प्रमाण मे वृद्धि होती है। जिसके कारण कार्य पर सरकार का सार्वजनिक व्यय

Scanned with CamScanner

PAGE NO.
DATE :

होने लगा। आधुनिक पद्धति के लोकशाही और कल्याणकारी शासन ध्यान मे लेकर सरकार को संरक्षण, सामान्य प्रशासन, पोलिस व कानून व्यवस्था, कल्याणकारी कार्य, सार्वजनिक कर्ज पर ब्याज इत्यादि कार्यों के लिए खर्च करना पड़ता है। सार्वजनिक खर्च के आधुनिक वर्गीकरण ध्यान मे लेते सार्वजनिक खर्च के रचना के निम्न प्रकार है।

① महसूल और पूंजीगत सार्वजनिक खर्च :- जो सार्वजनिक खर्च चालू खाते पर या महसूल खाते पर किया जाता है और जो सार्वजनिक खर्च संबंधीत काम के लिए हर वर्ष पुनः किया जाता है उसे महसूल खर्च कहा जाता है। ऐसा खर्च चालू उत्पन्न मतलब कर महसूल से किया जाता है इसके उलटा, पूंजीगत सार्वजनिक खर्च नई योजना के लिए जिससे महसूल उत्पन्न के स्रोत निर्माण होने की संभावना है। ऐसी पूंजीगत प्रकल्प पर पूंजीगत सार्वजनिक खर्च किया जाता है। पूंजीगत सार्वजनिक खर्च करने के लिए सरकार कर्ज निति का उपयोग करता है और ऐसे कर्ज निती की वापस करने के लिए संबंधीत प्रकल्प से निर्माण होनेवाली उत्पन्न का

Scanned with CamScanner

PAGE NO
DATE

कुछ भाग उपयोग करती है।

(२) योजना और योजनान्तर सार्वजनिक खर्च: विकासशील देशों में से कुछ देशों ने आर्थिक विकास साध्य करने के लिए नियोजन तंत्र का उपयोग शुरू किया है। मर्यादित भविष्य काल में उपलब्ध साधनसामग्री का उपयोग करके विकास के प्रकल्प पूर्ण करने के लिए जो सार्वजनिक खर्च किया जाता है उसे योजना खर्च कहा जाता है जिसके उलट सरकार जो चालू खर्च टालना नहीं आता जैसे खर्च की अपरिहार्य जवाबदारी सरकार पर होती है और जो खर्च सरकार को करना ही पड़ता है उसे योजनात्मक खर्च कहा जाता है।

(४) विकासात्मक और सार्वजनिक खर्च: देश का विकास लाने वाले चीजों पर किया जाने वाला खर्च मतलब विकासात्मक सार्वजनिक खर्च है जिसमे आरोग्य, परिवार, कल्याण, सार्वजनिक आरोग्य, स्वच्छता, पर्यावरण, पानी उपलब्ध कराना, घर बांधना, शिक्षा, विज्ञान, संशोधन, शास्त्रीय सेवा व संशोधन जानकारी व प्रसारण यातायात रोजगार विनिमय केंद्र,

Scanned with CamScanner

PAGE NO.
DATE :

रोजगार निर्मिती, कामगार कल्याण, खेती व खेती का अच्छी सेवा उपयोगी है खनिज परराष्ट्रीय व्यापार सामाजिक और सामाजिक विकास योजना, नागरी विकास इत्यादि देशों का विकास लाने वाली चीजों पर किया जाने वाले खर्च का समावेश होता है। जिसके कारण देश का आर्थिक विकास को प्रत्यक्ष हाथ भार लगाना नहीं पड़ेगा। वैसे ही जो सरकार को आवश्यक है इस लिए करना पड़ता है उसे विकासेत्तर या निर्जीक खर्च ऐसे कहा जाता है इसमें सरकारी कर्ज पर ब्याज कर व अन्य शुल्क जमा करने का खर्च, सार्वजनिक बांध काम, पोलीस न्यायदान देश का संरक्षण, सिक्के व नोट छपाई का खर्च निवृत्ती वेतन, टपाल व सेवा खर्च इत्यादी का समावेश होता है।

सार्वजनिक (खर्च) व्यय में वृद्धि (Growth of Public Expenditure)

बाह्य आक्रमण में देश का संरक्षण करना देश की न्याय सुव्यवस्था रखना इतना ही सरकार के कार्य पहले मर्यादित थे। जो सरकार कम से कम कार्य

Scanned with CamScanner

करती थी वे सर्वोत्तम है ऐसा मत एडम स्मिथ का था। अर्थव्यवस्था में गलती हुई तो अदृश्य शक्ति के द्वारा अपने आप ही दूर होकर अर्थव्यवस्था का कार्य पूर्ववत सही प्रकार से चलता था। ऐसा एडम स्मिथ का सरल और सीधा विचार था। निसर्गवादी अर्थशास्त्री ने एडम स्मिथ का निर्हस्तक्षेप धोरण का समर्थन अर्थविषयक कार्य व्यक्ति के पास देना ऐसा विचार पहले प्रबल था। परंतु 19 वीं शताब्दी के आखिर से विशेषतः 20 वीं शताब्दी के शुरुवात से समाजवादी विचारधारा का उदय और विकास कल्याणकारी राज्य की संकल्पना को बढ़ती सहायता और बहुसंख्य देश ने स्वीकार की गयी लोकशाही पद्धति इत्यादि से सरकार के कार्य में केवल विस्तृत वृद्धि ही नहीं तो सखोल और गहन वृद्धि हुई। जिसके कारण सार्वजनिक व्यय में बहुत बड़े प्रमाण में वृद्धि हुई है। 19 वीं शताब्दी में प्रसिद्ध जर्मन अर्थशास्त्री वेगनर उन्होंने सरकारी व्यय का वृद्धि संबंधी का जोतिक सिद्धांत सार्वजनिक व्यय को वृद्धि संबंधी का अनुभव पर आधारित विश्लेषण किया। इंग्लैण्ड अर्थशास्त्री ने एक. एस. निट्टी उन्होंने अनेक

Scanned with CamScanner

PAGE NO.
DATE :

देशो की प्राचीन काल से अब तक के खर्च को संख्या जमा करके उनका अध्ययन किया और ऐसा निष्कर्ष निकाला की केंद्रीकृत सरकार होते है । अर्थात या विकेंद्रीकृत सरकार अर्थात युद्ध क्षेम और स्थानीय छोटा था बड़ा अर्थात अब सरकार ने सार्वजनिक व्यय मे सतत प्रवृद्धि करने की प्रवृत्ती दिखाई देती है । 1961 मे पीकॉक-वाईजमन उन्होने देश की राष्ट्रीय संकट के बाद विस्थापन परिणाम केंद्रीकरण परिणाम व अंतर्निरीक्षण परिणाम के कारण सरकारी कार्य और सार्वजनिक खर्च कायम स्वरूप मे प्रवृद्धि होती है। ये सरकारी खर्च से संबंधी का गृहीतक की सहायता से स्पष्ट किया है कि विश्व मे सभी देशो की सार्वजनिक खर्च मे प्रवृद्धि हुई दिखाई देता है। सार्वजनिक खर्च मे प्रवृद्धि होने के कुछ कारण भी है।

Scanned with CamScanner